बनारस से अनवरत प्रकाशित

ISSN : 9334-0970

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

प्रान्ति इंडिया

बीआर/35/0029626

www.prantiindia.com magazine@prantiindia.com +91 94-535354-95

(हिन्दी को समर्पित मासिक पत्रिका)

जुलाई 2025

हिन्दी साहित्य का एक उदयमान तारा, नई पीढ़ी की आवाज़ को आकार दे रहा है।

₹ 50

स्त्री परिधान पर
"मर्दाना शर्ट"
उन युवतियों, किशोरियों
का पहनना
यह बतलाता है कि
वो चूल्हे चौके से निवृत्त हो
पुरुष कार्यों में जुटी हैं
मने कि स्त्री
घर- बाहर
दोनो ओर संभालती है
तो ज्यादा सक्षम
और श्रेष्ठ कौन !

-संघमित्रा चंचल, बीएचयू

मैं भी आसमाँ देखना चाहती हूँ

साहित्यिक
कार्यक्रम विशेष

Pranti

हमें भेजिए अपनी साहित्यिक पुस्तक-पत्रिकाएं

चयनित 501 कृतियों को मिलेगा प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

नोट : अपनी प्रविष्टियाँ संपादकीय कार्यालय में भेजें।

प्रान्ति इंडिया ISSN : 9334-0970 | जुलाई-2025 | मूल्य : ₹ 50 पृष्ठ : 36

प्रधान संपादक
आदित्य कुमार प्रसाद
(ए. के. प्रसाद)

संरक्षक व प्रबंधक : प्रदीप प्रसाद

विशेष संपादक : विनोद प्रसाद
विशेष सह-संपादक : विवेक रंजन
प्रबंध संपादक : दिव्यांजलि वर्मा
प्रबंध सह-संपादक : प्रेमलता चाँदना
आवरण अभिकल्पन : सौरभ कुमार

मुख्य कार्यालय
#495, पुरानी बाजार, बगौरा
सीवान-841404 (बिहार)

संपादकीय कार्यालय
जे11/125 ए-1, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

प्रान्ति इंडिया हिंदी साहित्य और संस्कृति को समर्पित एक जीवंत मंच है, जो हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करने और युवा पीढ़ी में इसके प्रति गहरी जागरुकता और प्रेम बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हमारा मिशन हिंदी साहित्य के विविध पहलुओं को उजागर करना और सामाजिक परिवर्तन में सकारात्मक योगदान देना है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन और सांस्कृतिक उत्थान हो सके। ध्यान दें कि सामग्री संपादित करते समय यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी, यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो इसके लिए स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे।

पत्रिका की गुणवत्ता से संबंधित शिकायतों व सुझावों तथा वितरण, सब्सक्रिप्शन और विज्ञापन के लिए ई-मेल करें-
magazine@prantiindia.com
या संपर्क करें-
+91 94-535354-95
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रातः साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

संपादकीय पत्र व्यवहार
प्रधान संपादक
जे.11/125 ए-1, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तरप्रदेश)
दूरवाणी : +91 7258072725

इस अंक में..

संपादकीय/मैं भी आसमाँ देखना चाहती हूँ	04
पेंटिंग ऑफ द अंक/युवाक्षी बिन्नानी	05
एक दिन अखबार में/ए. के. प्रसाद	06
महत्वकांक्षा/देवेंद्र कुमार मिश्रा	07
चार टुकड़ा मिठाई/डॉ0 हरिवंश शर्मा	08
नारीवाद का दुरुपयोग/दिव्यांजलि वर्मा	09
पद्य रचनायें	09-13
शोध पत्र/सचिन साह	14-16
पद्य रचनायें	17-32
मात्र प्लाट/वीना आडवानी तन्वी	33

आपकी राय

हमारी पत्रिका में संपादन संबंधी आवश्यक सुझाव/राय संपादक महोदय को ई-मेल पर भेजें।
editor@prantiindia.com

बनारस से निकलनेवाली साहित्यिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया के रक्षाबंधन विशेषांक अगस्त 2025 अंक हेतु आपकी एक कविता/कहानी/लघुकथा/संस्मरण/स्मृतियां/लेख अथवा अन्य विधा की रचना आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना के साथ एक फोटो, संक्षिप्त परिचय, संपर्क सूत्र सहित पत्राचार का पता व प्रकाशन शुल्क (₹200 रुपए) का स्क्रीनशॉट ई-मेल में संलग्न करना न भूलें। हमारा ई-मेल पता है–
vns@prantiindia.com

BHIM UPI
SCAN & PAY WITH ANY UPI APP
G Pay PhonePe Paytm

अधिकृत विक्रेता

वाराणसी : राजू मैगजीन स्टोर, लंका | अदिति बुक स्टोर, डीएवी | कमलेश बुक स्टॉल, मैदागिन

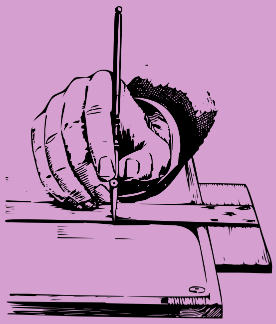

संपादकीय

मैं भी आसमाँ देखना चाहती हूँ

किसी कोने में चुपचाप बैठी एक लड़की की आंखों में कई सपने तैरते रहते हैं। कोई उन सपनों को पढ़ता नहीं, कोई उन्हें जानने की कोशिश नहीं करता। उसके भीतर हौसले की कमी नहीं होती, मगर अवसर अक्सर उसका साथ नहीं देते। घर की मजबूत दीवारें बाहर से भले ही सुरक्षित दिखें, पर वही दीवारें उसके सपनों पर पहरा भी बिठा देती हैं। लेकिन क्या किसी के सपनों पर ताला लगाया जा सकता है? क्या कल्पनाओं की उड़ान को किसी बंद कमरे में हमेशा के लिए कैद किया जा सकता है? यह सवाल सिर्फ एक लड़की का नहीं है। यह हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और हमारी सामाजिक चेतना पर भी सवाल है। जब कोई कहती है कि मैं भी आसमाँ देखना चाहती हूं तो वह केवल अपनी एक इच्छा नहीं बताती। वह हमें आईना दिखाती है कि आज भी हम आधी आबादी को पूरा आसमान देखने का हक नहीं दे पाए। आज जब प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2025 अंक आपके हाथ में है, हम चाहेंगे कि आप इस शीर्षक का गहरा अर्थ समझें। यह शीर्षक हम सबके मन में यह सवाल जगाता है कि क्या हम बेटियों के सपनों के लिए कोई खुला आंगन छोड़ पाए हैं? क्या हमारी परंपराएं इतनी कठोर हैं कि वहां किसी को ख्वाब पालने की भी जगह न मिले? या फिर हम अपनी सोच में इतनी जगह बना सकते हैं कि हर लड़की के लिए नए रास्ते खुलें, जो अब तक खिड़की से आसमान देखने पर मजबूर रहीं? यह अंक उन तमाम स्त्रियों को समर्पित है, जिनकी इच्छाओं को सीमाओं में बांध दिया गया, जिनके सपनों की ऊंचाई को लड़की होने का हवाला देकर छोटा कर दिया गया। लेकिन अब समय बदल रहा है। आज की बहन-बेटियां सिर्फ पढ़ना ही नहीं चाहतीं, वे अपनी पहचान बनाना चाहती हैं। वे अपने फैसले खुद लेना चाहती हैं। वे रिश्तों को बोझ नहीं, बल्कि प्रेम और समानता का आधार बनाना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि कोई उन्हें सिर्फ जिम्मेदारियों की गठरी न माने, बल्कि उनके हुनर, सोच और संवेदनाओं की भी कद्र करे। इस अंक में आप पढ़ेंगे कि एक गांव की लड़की की कहानी, जो तिनकों से अपने सपनों का घोंसला बुनती है और फिर हिम्मत से अपने पंख फैलाती है। आप जानेंगे उस युवती के शब्द, जिसने जीवन के संघर्षों को अपनी कविता में ढाल दिया। और आप पढ़ेंगे कि कैसे किसी ने तमाम बेड़ियों के बावजूद अपनी पढ़ाई पूरी की, और आसमान की ऊंचाई छूने की जिद पर अड़ी रही। यह संपादकीय उन तमाम आवाज़ों के प्रति आभार भी है, जिन्होंने इस मंच को जीवंत बनाए रखा। प्रान्ति इंडिया को हर महीने सैकड़ों बहनों की चिट्ठियां, लेख और कविताएं मिलती हैं। उनमें कहीं करुणा झलकती है, कहीं गुस्सा, कहीं हौसला और कहीं सपना। लेकिन हर रचना एक ही बात कहती है कि अपनी पहचान और अपना आसमान पाने की चाह। हमारी पूरी संपादकीय टीम का यही विश्वास है कि यह समय बदलाव का है। यही वह दौर है जब हमें अपनी सोच को और बड़ा करना है। अपने घर-परिवार में, रिश्तों में और संस्थानों में ऐसा माहौल बनाना है कि हर स्त्री निर्भीक होकर कह सके कि मैं भी आसमाँ देखना चाहती हूं और इस पर कोई ताना न मारे, कोई शक न जताए, कोई तिरस्कार न करे। अगर आपके घर में भी कोई बेटी, बहन, मां या पत्नी है, तो आज ही उससे पूछिए कि तुम भी उड़ना चाहती हो, आसमाँ देखना चाहती हो? और यकीन मानिए, उसकी आंखों में जो चमक उठेगी, वही भविष्य की असली रौशनी होगी। अंत में, एक विशेष स्मरण कि आने वाला महीना अगस्त रक्षाबंधन का है। जैसे हर साल यह पर्व विश्वास और स्नेह का सेतु बनाता है, वैसे ही इस बार भी मेरी अनगिनत बहनें अपनी राखियां भेजने की तैयारी कर रही होंगी। यह एक ऐसा विश्वास है...जो हमेशा कायम रहेगा।

—आपका भैया/संपादक

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

पेंटिंग ऑफ द अंक

–युवाक्षी बिन्नानी

बनारस से निकलनेवाली साहित्यिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया के **रक्षाबंधन विशेषांक** अगस्त 2025 अंक हेतु आपकी एक कविता/कहानी/लघुकथा/संस्मरण/स्मृतियां/लेख अथवा अन्य विधा की रचना आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना के साथ एक फोटो, संक्षिप्त परिचय, संपर्क सूत्र सहित पत्राचार का पता व प्रकाशन शुल्क (₹200 रुपए) का स्क्रीनशॉट ई-मेल में संलग्न करना न भूलें।

हमारा ई-मेल पता है–

vns@prantiindia.com

BHIM UPI

SCAN & PAY WITH ANY UPI APP

G Pay PhonePe Paytm

एक दिन अखबार में

- ए. के. प्रसाद

मेरे अप्रकाशित कहानी संग्रह से उद्धरित ...

हिन्दी साहित्य के प्रखर आलोचक बच्चन सिंह की वही मिट्टी, जो वर्षों से असंख्य साहित्यकारों के सपनों की साक्षी रही थी, उसी माटी में एक साधारण-सी दिखने वाली लड़की ने जन्म लिया था। बचपन से ही उसकी आंखों में एक विचित्र आत्मविश्वास की झलक दिखाई देती थी, मानो वह जानती हो कि उसका जीवन किसी साधारण मोड़ पर रुकने के लिए नहीं है। उसमें वह जिद थी, जो बड़े-बड़े किले भी ढहा देती है। वह जानती थी कि अगर उसे अपनी सोच और आकांक्षाओं को आकार देना है, तो उसे अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर दुनिया की सबसे पुरानी नगरी बनारस की सड़कों पर अपना रास्ता तलाशना होगा। जब उसने घर छोड़ने का निर्णय लिया, तब वह भीतर से जितनी दृढ़ थी, उतनी ही बाहर से असुरक्षित। बनारस आकर उसे हर चीज नई लगी। गलियों का शोर, गंगा का अथाह विस्तार, लाइब्रेरी की शांति और छोटे-छोटे कमरों में बसी अनगिनत कहानियां। उन कहानियों में कहीं उसका अकेलापन भी शामिल हो गया था। रात होते ही घर की याद उसके भीतर फैल जाती, लेकिन अगले ही दिन सुबह का उजाला उसके इरादों को फिर से उजला कर देता। वह खुद को समझाती कि असल सफलता उन्हीं को मिलती है, जो तकलीफों की तपिश में भी अपनी आस्था को सहेजकर रख पाते हैं। धीरे-धीरे तीन साल बीते। चार साल बीते। पाँच साल गुजर गए। जिस समाज ने पहले उसके जिद्दी सपनों को हल्के में लिया था, उसी समाज ने घरवालों को तानों की मूसलधार बारिश में भिगोना शुरू कर दिया। गाँव की गलियों में लोग कहते कि "देखा, बबुनि पढ़े गई है, जाने क्या कर रही होगी, पढ़ाई के बहाने किस दुनिया में खो गई होगी।" माता-पिता ने न जाने कितनी बार इस अपमान को अपने भीतर उतारा होगा। एक माँ, जो हर सुबह तुलसी के चौरे पर दीया जलाकर अपनी बेटी की सलामती की दुआ करती थी, और एक पिता, जो बाहर से कठोर दिखते हुए भी भीतर ही भीतर घुलता जा रहा था। इस सबके बीच वह लड़की, जो भीतर से कई बार टूटने की कगार तक पहुंची, हर बार अपने सपनों के टुकड़ों को फिर जोड़कर खड़ी होती रही। उसके पास कोई शॉर्टकट नहीं था, कोई विशेष सहारा नहीं था। उसके पास था तो केवल उसका आत्मविश्वास और मेहनत में विश्वास। जिन रातों में किताबें ही उसकी साथी बनती थीं, उन्हीं रातों ने उसे तपाकर ऐसा बना दिया, जो अंततः समाज की धाराओं के विरुद्ध खड़ा होने का साहस रखती थी। कहते हैं, मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। **एक दिन अखबार में बड़ा अक्षर में लिखा था कि "बनारस की बेटी ने यूपीएससी परीक्षा में देशभर में किया टॉप।"** वही लोग, जिन्होंने बरसों तक ताने मारे थे, आज मिठाइयाँ लेकर घर पहुंचने लगे। कोई कहता कि "हम तो पहले ही कह रहे थे कि यह लड़की कुछ अलग है।" कोई रिश्ते जोड़ने की कोशिश में लग गया। जीवन का यही अद्भुत सत्य है कि संघर्ष के दिनों में आप अकेले होते हैं, लेकिन सफलता की खबर आते ही पूरा संसार आपके क़दमों में बैठा दिखने लगता है। पर वह लड़की जानती थी कि इस उपलब्धि के पीछे कितने अपमान, कितनी नींदहीन रातें, कितनी बेचैनी और कितनी ईमानदारी छुपी हुई है। यह जीत केवल परीक्षा पास करने की नहीं थी, यह अपने अस्तित्व को, अपने फैसलों को, और अपनी माँ की आंखों के सपनों को सही साबित करने की जीत थी। उसकी कहानी यह सिखाती है कि अगर आपके सपने सच्चे हैं, अगर आपकी नीयत साफ है, तो कोई ताक़त आपको हारने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। ताने, अफवाहें, अकेलापन और असहायता। ये सब केवल अस्थायी पड़ाव हैं। मंज़िल उनकी होती है, जो टूटकर भी हर सुबह फिर उठने की हिम्मत रखते हैं। वही हिम्मत, जिसने एक गाँव की बेटी को देश की प्रेरणा बना दिया।

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

महत्वकांक्षा

— देवेंद्र कुमार मिश्रा

उसनें बचपन से ही तय करके रखा था कि वह गायिका बनेगी और एक सफल गायिका। पढ़ाई के साथ शास्त्रीय संगीत सीखती। महत्वकांक्षा का आलम ये था कि घर में गायको की फोटो से कमरा भरा था। आलम ये हुआ कि एक संगीत समारोह में उसे गाने का अवसर मिला। पूरे शहर में उसके नाम के चर्चे होने लगे। अब उसके मन में महब्त्वाकांक्षा ने जोर मारा और उसनें घर में कहा कि वह मुंबई जाना चाहती है फिल्मों में गाने के लिए, घर के लोग परेशान तो हुए लेकिन बेटी का मन भी नहीं तोडना चाहते थे। एक परिचित के माध्यम से मुंबई में पेइंग गेस्ट बनकर रहने लगी और संगीतकारों के यहां चक्कर लगाने के संघर्ष शुरु हुए। किसी ने शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए कहा। किसी ने रुपयों की डिमांड की। किसी ने आश्वासन दिए। किसी ने बाहर से ही मना कर दिया। उसे लगा कि वह हार गई। आत्महत्या की मन में बात, विचार आने लगे। जब महत्वकांक्षाओं की पूर्ति न हो तो व्यक्ति को कुछ और नहीं सुझाई देता। एक बार उसनें ऐसा किया भी। परिवार के लोग दौड़े चले आए। वह बच गई। पिता ने एक थप्पड़ मारते हुए कहा, जब हिम्मत नहीं थी संघर्ष की। हार को सहने की तो इतने बड़े ख्वाब पालने की क्या जरुरत थी। जीवन से भागने वाले चले हैं महत्त्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए। फिर माँ ने समझाया, इतना ऊपर जा कि लोग तुम्हें गाने के लिए खुद बुलाएँ। किसी संगीत ग्रुप के साथ मिलकर अपने लिए खुद धुन बनाओ और मंचों पर गाओ। उसे माँ का प्रस्ताव अच्छा लगा। एक दो बार की असफलता के बाद वह उस ऊंचाई पर पहुँच गई। उसके वीडियो, कैसेट, बाजार में बिकने लगे। उसे सुनने के लिए मंचों पर टिकिट लेकर लोग आने लगे। और फिर सिनेमा से भी कई प्रस्ताव आए। जिसे उसनें अपनी शर्तों पर गाया। आज वह सफल गायिका थी। उसकी महत्त्वकाकांझा पूरी हो चुकी थी वह समझ चुकी थी कि इतना आसान नहीं होता किसी सपने को पूरा करने। बाद में उसनें दूसरों में गायन के प्रति रुझान देखकर और कइयों को आत्महत्या करते देखकर संगीत अकादमी खोलने का निश्चय लिया। बेशक़ आज उसके पास पहले जैसे शौहरत नहीं थी। लेकिन दूसरों को संगीत की शिक्षा देकर वह तृप्त थी। उसकी महत्वकांक्षा का यह सकारात्मक पहलू था। अब उसे इसी में आत्मतृप्ती मिलती थी।

बनारस से निकलनेवाली साहित्यिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया के रक्षाबंधन विशेषांक अगस्त 2025 अंक हेतु आपकी एक कविता/कहानी/लघुकथा/संस्मरण/स्मृतियां/लेख अथवा अन्य विधा की रचना आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना के साथ एक फोटो, संक्षिप्त परिचय, संपर्क सूत्र सहित पत्राचार का पता व प्रकाशन शुल्क (₹200 रुपए) का स्क्रीनशॉट ई-मेल में संलग्न करना न भूलें।
हमारा ई-मेल पता है—
vns@prantiindia.com

BHIM UPI
SCAN & PAY WITH ANY UPI APP
G Pay PhonePe Paytm

माँ

चूल्हे के घुएं के बीच
अदहन में भात सींझाती हुई
तुलसी चौराहा के पास दीप चलाती हुई
दरवाजे पर खड़ी
खेत - खलिहान से मेरे आने की बाट जोहती
दूर रिश्तेदारी से मेरे कई दिनों से न लौटने
नहीं कोई संदेशा पाने से
डभडभाई आंखों से सगुन का टोटम करती हुई
कई तस्वीरें हैं मां की मेरे जेहन में
जिसे सजा कर रखा हूं अपने दिल में
अनोखे एल्बम की तरफ।

-लक्ष्मीकांत मुकुल, बिहार

चार टुकड़ा मिठाई

— डॉ0 हरिवंश शर्मा

गर्मी का सीजन था। चारों तरफ सहालगों के बैण्ड बाजे और डीजे की आवाजें गूंज रही थीं। उसने अब बारातों में जाना कम कर दिया है। इसका साफ मतलब यह है कि उसे अब फुर्सत नहीं। माया ने इधर-उधर के भटकाव को छोड़कर एक विद्यालय में चपरासी की नौकरी कर ली है। वह भी प्राइवेट, जिसका न तो ठौर-ठिकाना है। यह नौकरी भी कब तक चलेगी, सब भगवान भरोसे है। इससे पहले माया ने हरियाणा जैसी जगहों पर भी अपना घरबार छोड़कर मजदूरी का काम किया है। मैंने इंटरव्यू की साधारण पूछताछ भी की। अब उसके कई महीने बीतने को हैं। न थकने वाली माया सबको दौड़-दौड़कर पानी पिलाती है, चाय बनाती है।

एक दिन मैंने पूछ लिया कि तुम्हारे परिवार में कौन-कौन है?
उसके चेहरे पर कुछ अलग प्रकार की आभा थी। बोली –
"सर, एक बेटा है, पंद्रह साल का। लखीमपुर एक कॉलेज में पढ़ता है। इसके पिताजी नहीं हैं सर। वह बहुत पहले गुजर गए थे।"
मैं अवाक् था। वह बोलती जा रही थी –
"ससुराल से थोड़ी ही दूर मायका है मेरा। मेरे भाई की पत्नी भी गुजर गई, तो भाई के बच्चों की देखभाल भी हम ही करते हैं। भाई दिल्ली में मजदूरी करते हैं।"

यह कहकर वह परीक्षा की लिखित कापियों के बंडल सिलने में लग गई। मैं सोच में पड़ गया कि एक विधवा का इतनी जिम्मेदारी के साथ दो परिवारों के बच्चों का लालन-पालन, वह भी माथे पर बिना किसी सिकन के। मुझे महसूस हुआ कि इतने संघर्ष में जीने के इसी रूप को जीवंतता कहते हैं।

अपने रूम से मैं बाहर निकला ही था कि स्टाफ रूम में कुछ शिक्षक साथियों पर नज़र पड़ी। वे मोबाइल में खींचे गए एक फोटो को देखकर चर्चा कर रहे थे। जिज्ञासा ने वहाँ जाने पर मजबूर कर दिया। मोबाइल में खींची तस्वीर एक टिफिन की थी। इस टिफिन में चार टुकड़े मिठाई के रखे थे। वहाँ लोगों ने बताया कि ये मिठाई चुराकर घर ले जाने की योजना थी।

"आखिर है किसका ये टिफिन?"
"माया का।"
मैं सन्न था। मुंह से निकल गया – "क्या?"
"हाँ सर, माया का ही टिफिन है।"
"ऐसे भला क्या कोई मिठाई की भी चोरी करता है?" – सब अपना-अपना तर्क दे रहे थे।

तब मुझे कई साल पहले की एक घटना याद आई। लगभग ऐसी ही थी। कल्पना नाम की एक महिला कर्मी थी, जो किचन में चाय बनाने का काम करती थी और समय-समय पर स्टाफ और आगंतुकों की सेवा में लगी रहती। किसी कर्मचारी ने ही उसके टिफिन कैरियर (तीन खाने वाला टिफिन) को देख लिया और मुझे बताया। वह चुपके से टिफिन उठाकर मुझे दिखाने ले भी आया। वह टिफिन के तीनों खानों में भरकर चीनी ले जा रही थी। एक व्यक्ति ने उसका फोटो भी लिया था। बाद में उसकी शिकायतें करके नौकरी से लोगों ने हटवा ही दिया।

ऐसा ही यह वाकया था, जिसमें माया की नौकरी का जोखिम लग रहा था। कहते हैं कि सौ बार फूंक मारने से गीला भी जल उठता है। मैंने उन लोगों को समझाकर मामला वहीं खत्म करा दिया। फिर भी मेरा मन व्यथित था। मैं सोच में पड़ गया कि उसकी ऐसी क्या मजबूरी थी कि मिठाई के चार टुकड़े टिफिन में ले जाने पड़े। हाँ, यह बात दीगर है कि तर्क देने वाले और फोटो पर तरह-तरह के विचार रखने वालों को शायद भूख की लाचारी नहीं पता। वे तो अपने पुरखों की बनाई सम्पत्ति का बड़े मजे से सुख भोग करते हैं। मुझे ऐसा लग रहा था कि उनके सीने में दिल तो है लेकिन बिना मानवीय अहसास के।

माया विधवा थी। यह बात लगभग सभी को पता थी। माया जैसी स्त्रियां समाज में किसी न किसी यंत्रणा का शिकार जरूर होती हैं। कुछ डूब जाती हैं और कुछ मेहनती तैर कर बाहर निकल आती हैं। निर्दयी समाज को यह कतई नहीं पता होता है कि जब पति कमाता है और शाम को वह घर आता है तो आते समय उसकी आँखों में वह सुबह का सपना कौंध जाता है कि घर के नन्हे मुन्नों ने आज किसी चीज की फरमाइश की थी। यूं तो गरीबों के बच्चे इसमें ढल जाते हैं कि उनको बड़े सपने नहीं आते हैं। यदि कुछ इच्छा होती भी है तो पुराने ज़माने में जहाँ कंपट और लेमनचूस था, आज के समय में कुरकुरे और टेढ़े-मेढ़े हो गए हैं।

शाम को लौटते वक्त पिता अपने बच्चों की खुशी में शामिल होना चाहता है। यदि पिता का साया न हो तो माया जैसी माएँ साया बनती हैं। अपने सपनों में बच्चों का सपना देखती हैं। इसी इच्छा से कम तनख्वाह पाने वाली माया के मन में अपने बच्चों को एक पीस मिठाई खिलाने का मन आ गया। किचन का काम देखने के चलते उसकी नजर मिठाई की प्लेट पर पड़ी तो उसे बच्चों को मिठाई खिलाने के सपने तैर गए और चार टुकड़ा मिठाई निकाल कर अपने टिफिन में रख लिए। ऐसी कितनी माएं होंगी जिनकी मजबूरियां रही होंगी। उनके सपने टूटे होंगे। यह शायद खिल्ली उड़ाने वालों की समझ में नहीं आ पाएगा। बड़े-बड़े ढकोसले परोसने वाले बैनर के साथ फोटो खिंचवाने वाले उसके दर्द के अहसास नहीं कर सकेंगे। यह विडम्बना है – नजर और नजरिए की।

माया को इसकी ज़रा भी भनक नहीं है कि जिन लोगों को बोतलों में ठंडा पानी भर-भरकर, दौड़-दौड़कर प्यास बुझाने में लगी रहती है, उनकी नजरों में माया एकमात्र अपढ़, गंवार चपरासी भर है। आज भी वह दिनभर पूरी शिद्दत से जुटी रहती है। चार पीस मिठाई के लिए पैसा जुटाने की खातिर ही सही लेकिन वह हार न मानेगी, ऐसा जरूर लगता है।

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

नारीवाद का दुरुपयोग

समाज में नारियों को उनके सभी अधिकारों को दिलाने और पुरुष स्त्री का भेद मिटाकर समानता का पाठ पढ़ाने के लिए नारीवाद आंदोलन की शुरुआत हुई। समाज की नारियों को इससे बहुत लाभ मिला। उनके जीवन में काफी सकारात्मक बदलाव भी हुए। लेकिन क्या वर्तमान समय में भी नारीवाद का सही उपयोग हो रहा है? यह प्रश्न सहज ही हर किसी के मन में आ जाता है। जहां नारीवाद के नाम पर नारियों को उनके अधिकारों को दिलाने की बात हुई थी। अब उन्हीं अधिकारों का दुरुपयोग हो रहा है। उदाहरण के तौर पर नारियों द्वारा कपड़ों के चयन को ले लेते हैं। वर्तमान समय में पढ़े लिखे और मॉडर्न दिखने के लिए नारियों द्वारा नारीवाद के नाम पर अश्लील, छोटे, भद्दे कपड़े पहने जाते है। और जब पुरुष वर्ग द्वारा उन्हें गलत कहा जाता है, विरोध किया जाता है, तो उल्टा पुरुषों को ही गलत ठहरा कर उन्हें उनकी सोच बदलने को कहा जाता है। असल में यहां कमी और गलती पुरुष की नहीं उनकी खुद की होती है। पुरुष क्या, समाज का हर वर्ग अश्लील कपड़े से उन्हें गलत समझ समझ रहा है। लेकिन नारीवाद के नाम पर जबरदस्ती पुरुष वर्ग को गलत ठहरा कर उन्हें सोच बदलने को कहना कहा की समझदारी है। हां, ये कह सकते हैं कि जो पुरुष किसी सभ्य, सनातनी, शालीनता से कपड़े पहने हुई महिला से अभद्र, गंदी, अश्लील बातें करें। तब उस पुरुष को गलत कह कर उसे अपना दृष्टिकोण बदलने को कह सकते है। और केवल महिलाओं के कपड़े से ही उनका स्तर और मानसिकता क्यों जानना, पुरुषों की बातों से भी उनका स्तर और मानसिकता पता चलती है। क्या कभी किसी धार्मिक, आध्यात्मिक पुरुष को ऐसे अभद्रता, अश्लीलता से किसी महिला से बात करते देखा है। बिल्कुल भी नहीं। अगर एक नारी ईश्वर भक्ति शुरू कर दे। हाथ में कलावा बांध ले। वैष्णो माता का कड़ा पहन ले। गले में तुलसी माला और रुद्राक्ष की माला पहन ले। कपड़े में साड़ी या भारतीय परिधान या पूरा तन ढका कपड़ा पहन ले। माथे पर चंदन तिलक लगाना शुरु कर दे। व्रत रखना, पूजा पाठ करना, धर्म ग्रंथो को पढ़ना शुरु कर दे। तो उसे देखकर हर कोई यही कहेगा कि वह ईश्वर की भक्त है। उसमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास है। जो जैसे कपड़े और आचरण का चयन और प्रदर्शन करता है। समाज उसी के अनुसार उन लोगों के बारे में अपने विचार प्रकट करता है। अब नारीवाद के नाम पर अपनी आजादी और मनमानी के लिए दूसरों को गलत ठहरना और उन्हें सोच और दृष्टिकोण बदलने को कहना तो नारीवाद का दुरुपयोग करना ही कहा जाएगा। अगर कहीं गंदगी या कीचड़ पड़ा है तो उसे देखकर हर कोई गंदा ही कहेगा। इस पर भी अगर कोई गंदगी पसंद इंसान आकर बोले कि नहीं ये गंदगी नहीं है। ये मुझे पसंद है। आप अपनी सोच बदलने। तो आप इसे क्या कहेंगे ?

-दिव्यांजलि वर्मा, अयोध्या

बनवास

श्री राम रुप मुनि का धर
बन निकल रहे हैं।
देखो अवध के राजा
बन बन भटक रहे हैं।।

महलों की राजरानी
सीता चली है संग में।
पैरों में उनके कांटे
पग पग पे चुभ रहे हैं।।

लक्ष्मण जी बन के सेवक
श्री राम के चले हैं।
महलों में उर्मिला के
अश्रु छलक रहे हैं।।

दशरथ जी होके व्याकुल
श्री राम को पुकारें।
मेरे राम को बुला दो
मेरे प्राण निकल रहे हैं।।

-डॉ नीलम बावरा मन, दिल्ली

योग

आओ हम सब मिलकर करें एक प्रयास।
नियमित करें योगाभ्यास।।
योग निरोगी काया के लिए विधि विधान है।
ग्रन्थों में धर्म और चिकित्सा में विज्ञान है।।
स्वयं को स्वयं से मिलना है योग।
जीवन सुखमय कर दे तन को करे निरोग।।
स्वयं को जागृत करने की शक्ति देता है योग।
शरीर और आत्मा को एकाकार करता है योग।।
योग साधना है योग है शक्ति।
योग से होती है तन और मां की उन्नति।।
सदा निरोगी काया रखें जीवन में संकल्प लें।
सूर्योदय से पहले उठकर आधा घंटा योग करें।।।
श्वास- प्रश्वास की प्रक्रिया से हम ईश्वर से संयोग करें।
अपनी आत्मिक उन्नति हेतु आओ हम सब योग करें।।
स्वस्थ हमारा जीवन होगा तो सब कुछ अच्छा होगा।
योग कर्म के द्वारा जीवन को सक्रिय बनाना होगा।।
योग से आती है जीवन में सकारात्मक ता।
शरीर मन और आत्मा को जोड़ के घटा देती है नकारात्मकता।।
नैतिक आयाम व्यायाम आहार प्रत्याहार है योग।
आओ हम सब मिलकर इसे अपनायें जीवन करें निरोग।।
ईश्वर प्रदत्त साधन है योग।
साधक और साध्य के बीच की कड़ी है योग।।
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाएं।
हम सब अपने जीवन में योग को अपनाएं।।

- डॉ सरिता चौहान
गोरखपुर, उत्तरप्रदेश

दीवारों की ख़ामोशी

जब सब सो जाते होंगे,
तब दीवारें भी करती होंगी बातें,
उतनी ही ख़ामोशी से, बच-बच के,
जितनी हम यह कह कर करते हैं बातें—
कि दीवारों के भी कान होते हैं।

दीवारें भले न सुन सकीं उनकी सारी बातें,
पर सदियों से महसूस करती आई हैं वो आहटें,
खिड़कियों पर सिर रख कर रोते लोगों के आँसू,
और उन साँसों की सिसकियाँ जो शब्द न बन सकीं।

वो भी सहम जाती हैं हर बार,
जब पंखों से बांधी जाती हैं रस्सियाँ—
हर चुप्पी में छुपे एक अंतिम प्रयास की गूंज
वो अब भी अपने सीने में दबाए बैठी हैं।

अंधेरे में वो देख चुके हैं वो दृश्य,
अंधेरे में वो महसूस कर चुके हैं वो दर्द,
जो उजालों में कभी देखा ना गया
या देखा भी गया तो समझा न गया।

-मनीष कुमार शर्मा
मधुपुर ,देवघर (झारखंड)

माँ पर कहना बहुत कठिन है

इस जग में माँ के ऋण से,
कोई भी तो उबर न पाया।
नहीं है कोई डगर जहाँ पर
माँ का रूप नज़र न आया।

जीते ललना इसी मोह में
कितना ही तुम हारती थी।
लिये बलैयाँ तुम दुलार कर
हरदम ही तो निहारती थी।

लाड़ प्यार में मेरी माँ से
कभी हुई न कोई चूक।
चुप रहती,सब कुछ सहती
सहन न होती मेरी भूख।

खुश होता मैं वह भी हँसती,
फूंक मार सब पीड़ा हरती।

जब घर आता तब वह रोती,
जाने लगता, माँ फिर रोती।
आंखों से आशीष टपकता,
माँ ऐसी ममता का मोती।

नेह ,छोह संस्कार दिये हैं
शब्दाक्षर प्रतिमान दिखा कर।
आशीष प्रेरणा देकर दुलार से
ज्ञान,ध्यान, सम्मान सिखा कर।

जिनको भी अपने जीवन में
मिला है माँ के प्रेम का सागर।
कभी नहीं वह पुत्र करेगा करेगा
कहीं किसी नारी का अनादर।

श्रद्धा से "अम्मा जी" के
चरणों में सिर न्यस्त करुँ,
चली गयी माँ के अभाव को
मैं किन शब्दों मे व्यक्त करुँ ?
यह जीवन जिस माँ का ऋण है,
उस माँ पर कहना बहुत कठिन है।

-विवेक रंजन 'विवेक'

चाहत आम आदमी की

मेरे आस पास रहते हैं
बड़े सलीकेदार लोग
कल्फ किये ब्रांडेड कपड़ें
नई २ कारों पर सवार
गिटपिट अंग्रेजी कभी
मुहावरेदार गाली हिन्दी में
एक दूसरे को हिकारत भरी
नज़रों से निहारते
अपने कुत्ते को टहलाने
निकलते हैं रोज सुबह शाम
मैं भी उन्हें देखकर कभी २
मिलने निकल पड़ता हूं
अपनी हवाई चप्पल और
बिना प्रेस किये सफेद पायजामे में
पत्नी कुढ़ती रहती है कि
मैं कभी नही लगा राजपत्रित अधिकारी
अक्सर घर में आ जाता है भूचाल
बिना बुलाये बवंडर भी
जब मैं चुपके से अपने साथ
कहीं से चुरा लाता हूँ
पेड़ के नीचे सोये श्रमिक का
सकून भरा सपनों का संसार
सड़क की मिट्टी, बालू, खर पतवार
हवा भी साथ में ले आती है
वातावरण में बसी मजदूरों की
पसीने की दुर्गंध तो कभी
अनायास प्रवेश पा जाती है
सामने निर्माणाधीन बिल्डिंग से
छेनी हथोड़ी का कर्णभेदी संगीत
शांति को भंग करती
द्विगुणित कर देती है
क्रोध गृहस्वामिनी का
कौंध जाती है बिजली और
पानी२ हो जाता है कमरा
मैं चुपचाप बहोरने लगता हूं
पानी और मिट्टी
कमरे की क्लांत दीवारें
साक्षी होती हैं मेरे घुटन की
फिर खोलना पड़ता है
बन्द दरवाजे और खिड़कियां
ताजी हवा का एक झोंका
छू जाता है मन को
बदलने लगती हैं ऋतुयें
बदलते जाते हैं पृष्ठ
बचपन से यौवन के
मैं आम आदमी ही रहा हमेशा
लाख कोशिश करने पर भी
खास नही बन पाया कभी
सिमेंट की बेंच पर पड़ी छड़ी
अब सम्हलती नही मुझसे
सहारे के लिये इधरउधर
देखता रहता हूँ मैं
नन्हे पक्षियों की तरह
पेड़ो पर फिर भी फुदकना चाहता हूँ
पर उड़ने की अब ताकत नही है।

- सुभाष चन्द्रा (लखनऊ)
+91 7753811127

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

निर्मला पुतुल के काव्य संसार में आदिवासी स्त्री चिंतन

—सचिन साह, दार्जिलिंग

आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' से मिलकर बना है। 'आदि' शब्द का अर्थ प्रारंभ से और 'वासी' शब्द का अर्थ निवास करने वाले, जिसका अर्थ 'मूलनिवासी' होता है। अन्य शब्दों में कहे तो 'आदिवासी' शब्द का अर्थ 'प्रारम्भ से निवास करने वाले' कह सकते हैं। आदिवासी ऐसे लोगों का समूह है जो किसी निश्चित भू-भाग पर निवास करते है। जिनकी अपनी एक संस्कृति होती है तथा जो आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े हुए होते है। भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में सम्बोधित किया जाता है।यह वर्ग समाज का एक ऐसा वर्ग रहा है जो सदियों से अब तक किसी ना किसी रूप में अपने से उच्च वर्ग द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि दृष्टियों से उपेक्षित, शोषित ही रहा। जिसे समाज ने ना कोई अधिकार दिया न सम्मान। आदिवासी समुदाय के इस समस्या को लेकर बहुत से विद्वानों ने समय-समय पर अपनी लेखनी चलाई है। किसी ने उसे अपने कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया, किसी ने कहानी के माध्यम से, किसी ने उपन्यास के माध्यम से तो किसी ने अन्य किसी विधा को माध्यम बनाकर इनकी समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। इन्हीं रचनाकारों में एक रचनाकार निर्मला पुतुल भी है जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से इन वर्गों की समस्याओं को अभिव्यक्त किया है।

आदिवासी समाज की पीड़ाओं एवं समस्याओं को वाणी देने वाली स्त्री लेखिकाओं में निर्मला पुतुल का नाम प्रमुख रहा है। पुतुल जी ने अपने समाज की पीड़ाओं को व्यक्त करने के लिए भावाभिव्यति के सशक्त माध्यम कविता का सृजन किया है। ये संथाली और हिंदी, दोनों भाषाओं की प्रमुख कवयित्री के रूप में चर्चित, प्रशंसित तथा लोकप्रिय हैं।इनकी कविताएँ स्वयं के अस्तित्व की तलाश करती हुई आदिवासी स्त्री के प्रत्येक क्षेत्र में किये जाने वाले शोषण को अभिव्यक्त करती है और उन लोगों पर अपने शब्दो का तीव्र प्रहार करती है जो आदिवासी स्त्री को देखते ही नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं।

आदिवासी समाज आज भी अज्ञान और अशिक्षा के कारण अपनी रुढ़ि परम्परा के चंगुल से बाहर नहीं आ पाया है। ऐसे समाज में नारी की क्या स्थिति हो सकती है? नारी समाज का एक अंग है। कोई भी समाज नारी के विभिन्न रूपों से अछूता नहीं रह सकता। उसका अपना अस्तित्व है जिसे व्यवस्था ने दबाया है। उसे युग-युग से पुरुषो के अधीन रहना पड़ा है। उसे आज भी बहुत से परिवार में एक भोग की वस्तु के रूप में ही देखा जाता है। दिन भर काम करने के बाद रात में दारू -ताड़ी पीने वाले पति से उसका देह शोषण होता है। पुतुलजी इसे 'पाश्विक ताण्डव' कहती है। वह स्वयं भूख-प्यास सहती, थकान में भी वे कर्मनिरत होती रहती है। क्योंकि पहाड़-सा दुःख के साथ उनमें पहाड़- सा धीरज भी है। सारे प्रयत्नों के बावजूद भी उनके जीवन में जंगल जैसी शून्यता विद्यमान है। यही है आदिवासी स्त्रियों की सबसे बड़ी विडंबना।

आदिवासी स्त्रियों पर निर्मला पुतुल ने अधिक कविताएँ लिखी हैं। अब तक उनके तीन काव्य संग्रह 'नगाडे की तरह बजते शब्द', 'अपने घर की तलाश में', 'फूटेगा एक नया विद्रोह' प्रकाशित हो चुके हैं। ये तीनों ही कविता - संग्रह आदिवासी के जीवन पर प्रकाश डालते हैं। जिनमें पुरुषवादी सोच की चिन्ता और नारी की अस्मिता आदि पर प्रकाश डाला गया है।

आज आदिवासी समाज की प्रमुख समस्या विस्थापन की हैं। विगत एक दशक में अकेले झारखंड राज्य से दस लाख से अधिक आदिवासी विस्थापित हुए हैं। विस्थापन की समस्या का प्रभाव समूचे आदिवासी समाज पर तो हुआ ही है, साथ ही आदिवासी स्त्री की अस्मिता पर भी हुआ है। निर्मला पुतुल अपनी कविता, 'तुम कहा हो माया' की इन पंक्तियों से यह स्पस्ट होता है-

“ दिल्ली के किस कोने में हो तुम ?
कहीं हो भी सही-सलामत या
दिल्ली निगल गई तुम्हें ?”

पुतुल जी की यह पंक्ति 'कहीं हो भी सही-सलामत या दिल्ली निगल गई तुम्हें?" विस्थापित स्त्री के शोषण की ओर संकेत करती है। विस्थापन के कारण जीवन-यापन हेतु आदिवासी लडकियाँ चाहे - अनचाहे मजदूरी का काम करने लगी और चाहे - अनचाहे इन लडकियों को वेश्या व्यवसाय की ओर विमुख होना पड़ा। जिससे आदिवासी स्त्री की अस्मिता मलीन हो गई। यह तथाकथित सभ्य समाज आदिवासी समाज को विकास के नाम पर उनकी लड़कियों का शोषण करता है। पुतुल जी की कविताओं में ऐसी कई नारी पात्र है जिनकी ज़िन्दगी बलात्कार की वजह से विकृत हुई है। आदिवासी नारियाँ जंगलों पर अधिक आश्रित है। लकड़ी बीनना, औषधियाँ जमा करना जैसी आवश्यकताओं के लिए वे घने जंगल चली जाती हैं। वन्य जंतुओं से वे भयभीत नहीं है। लेकिन जानवरों से ज़्यादा उसे डर है पुरुष से, जो उन पर हमला करने हेतु जंगलों में अवसर पाकर छिपे रहते हैं। उन क्रूर पशुओं के हाथों फँसकर पीड़ा भोगतीं नारियों का सही आंकड़ा किसी सरकार के पास नहीं है।

आज हर कोई शहर की ओर जाना चाहता है। महानगर अर्थ-प्राप्ति का केन्द्र बनते जा रहा है। महानगरों की चकाचौंध ग्रामीण लड़के-लड़कियों को आकर्षित करती है। जिससे लड़कियों में महानगरों के प्रति रुचि बढ़ती जा रही है। किन्तु आदिवासी समाज की लड़कियाँ अपने जल, जंगल, जमीन एवं संस्कृति के साथ खुश हैं। वे प्रतिष्ठित सभ्य समाज की यह औपचारिक व्यवस्था का हिस्सा नहीं बनना चाहतीं। अपने माता-पिता तथा सगे-सम्बन्धियों से अधिक दूर नहीं जाना चाहतीं।आदिवासी स्त्रियों की यह अभिव्यक्ति निर्मला पुतुल की कविता ‘उतनी दूर मत ब्याहना' में देखने को मिलती है। जिसमें एक ग्रामीण लड़की शादी के बारे में सोचते हुए अपने बाबा से कहती है कि अपने से ऊँचे वालों से मुझे मत ब्याहना तथा अच्छे इन्सान और अपने जैसे परिवेश में ही मेरा ब्याह करना ताकि आपके सुख-दुख में भी शरीक हो सकूँ। विवाह के बारे में बाबा से बेटी बोलतीं है कि-

‘बाबा !
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने खातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें।’

वह अपने जैसे परिवेश में ही शादी करने की इच्छुक है तभी तो यह कहती है कि जहाँ जंगल, नदी, पहाड़ न हों वहाँ मेरी शादी मत करना। मुझे अपने ही इलाके में ब्याहना जहाँ तुम सुबह जाकर शाम तक पैदल लौट सको और मेरे सुख-दुख में शरीक हो सको।

निर्मला पुतुल आज के सभ्य समाज की महिलाओं द्वारा आदिवासी महिलाओं के साथ किए जा रहे धोखे से अपने समाज को जागृत करना चाहती हैं। सभ्य समाज की महिलाओं द्वारा महिलाओं पर हो रहे अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध विविध महिला संगठन चलाए जा रहे हैं। कवयित्री इन संगठनों के दिखाने और खाने के दाँत समाज के सामने लाना चाहती है। इन संगठनों द्वारा यह सामाजिक कार्य दिखावे तथा प्रसिद्धि के लिए ही किया जाता है। शोषित तथा पीड़ित महिलाओं के न्याय हेतु सभा, समारोह, नारे, बहस आदि सब ढोंग है-

‘एक बार फिर
ऊँची नाकवाली
अधकटे ब्लाउज पहने महिलाएँ
करेंगी हमारे जुलूस का नेतृत्व
बहस की तेज आँच पर पकेंगे नपुंसक विचार
और लिये जाएँगे दहेज, हत्या, बलात्कार, यौन उत्पीड़न
वेश्यावृत्ति के विरुद्ध मोर्चाबन्दी कर
लड़ने के कई-कई संकल्प।’

आदिवासी स्त्रियाँ बहुत ही मेहनती होती हैं। वे पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती हैं। बल्कि उनसे ज्यादा ही करती हैं। उन्हें घर और बाहर दोनों जगहों पर काम करना पड़ता है। वे पत्तल, चटाई, पंखा, झाड़ू आदि अनेक उपकरण बनाती हैं। उन्हें बाजार में जाकर बेचती हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण करती हैं। निर्मला पुतुल की 'गजरा बेचने वाली लड़की', 'आदिवासी लड़कियों के बारे में', 'आदिवासी स्त्रियाँ', 'बाहामुनी', 'चुड़का सोरेन से' आदि कविताओं में आदिवासी स्त्री का अभावग्रस्त चित्र उपस्थित हुआ है। यथा-

‘अखबार बेचती लड़की
अखबार बेच रही है या खबर बेच रही है
यह मैं नहीं जानती
लेकिन मुझे पता है कि वह
रोटी के लिए अपनी अवाज बेच रही है।'

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

इसी तरह 'गजरा बेचने वाली स्त्री' कविता में दूसरों की सुन्दरता बढ़ाने के लिए फूलों की माला बेचने वाली एक भोली स्त्री का चित्रण है। भारी मेहनत की निशानी जिसके पैरों की फटी बिवाइयों में दृष्टिगत होती है। वह खुद बदसूरत है। गजरा नहीं लगाती और दूसरे स्त्रियों को गजरा की विशेषताओं के बारे में बताती है, सुन्दरता बेचती है। कवयित्री बताती हैं कि यह कितनी दुखद स्थिति है। लेकिन उससे अपनी आजीविका पूरी तरह चलाने को वह सक्षम नहीं होती।

स्त्री को पुरुष प्रधान समाज में आर्थिक दृष्टि से विपन्न ही रहना पड़ा है। पुरुषों ने जानबूझकर स्त्रियों को लाचार बनाया है । परिणामस्वरुप उस पर अनेक तरह के अन्याय, अत्याचार होते रहें। इसलिए निर्मला पुतुल अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्री -पुरुष व्यवस्था के प्रति विद्रोह करती नजर आती है।

आदिवासी स्त्री के साथ प्रतिष्ठित समाज शोषण तथा अन्याय कर ही रहे हैं, किन्तु विडम्बना इस बात की है कि आदिवासी समाज का पुरुष भी आदिवासी स्त्रियों पर अत्याचार करता है और उसे चन्द पैसों के लिए, एक बोतल विलायती शराब हेतु अपने गाँव तथा स्त्रियों को गिरवी रख रहा है। जिससे आदिवासी नारी की पीड़ा में वृद्धि हुई है। 'चूड़का सोरेन से' कविता में निर्मला पुतुल ने दिखाया है कि किस प्रकार शराब की एक बोतल के लिए गांव का प्रधान पूरे गाँव को बेच देता है-

'कैसा बिकाऊ है तुम्हारे गाँव का प्रधान
जो सिर्फ एक बोतल विदेशी दारू में रख देता है
पूरे गाँव को गिरवी
और ले जाता है कोई लकड़ियों के गट्ठर की तरह
लादकर अपनी गाड़ियों में तुम्हारी बेटियो को
हजार-पाँच-सौ हथेलियों पर रखकर।'

आदिवासी स्त्री को केवल भोग्य की वस्तु के रूप में देखनेवाले पुरुष समाज पर निर्मला पुतुल आक्रोश प्रकट करते हुए आदिवासी लड़कियों को सचेत करती है। निर्मला पुतुल की कविताओं में संथाल समाज में फैली अंधविश्वास एवं रीति रिवाजों का चित्रण भी दिखाई देता है। जिसका दुष्परिणाम आदिवासी स्त्रियों पर भी देखने को मिलता है। उनकी कविताओं में डायन जैसी कुरीतियाँ भी दिखाई देती है। आदिवासी समाज में पंचायत को बहुत महत्त्व दिया जाता है और कानून तोड़नेवालों को सशक्त सजा । यदि किसी महिला को डायन करार दिया जाएं तो उसे भरी पंचायत में नंगा नचाया जाता है।

अतः आदिवासी स्त्रियों का दर्द अन्य स्त्रियों के तुलना में अधिक भयावह है। उन्हें स्त्री होने का और आदिवासी होने का दोहरा दंश झेलना पड़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्रियों की स्थिति की अभिव्यक्ति सुंदर ढंग से व्यक्त हुई है। उन्होंने अपनी कविताओं में आदिवासी स्त्रियों पर हो रहे सामाजिक , आर्थिक, शारीरिक आदि शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। इनकी कविताओं की वजह से पाठक वर्ग को खास तौर से आदिवासी स्त्रियों की उन अंतर्विरोधों को पहचानने की दृष्टि प्राप्त होती है जिनकी वजह से वह उपेक्षित, असुरक्षित तथा अस्तित्वहीन जीवन जीने को मजबूर है। उसे पता चलता है कि उसके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है ? वह कैसा जीवन जी रही है? इन सभी समस्याओं के साथ आदिवासी स्त्री पर स्त्री होने तथा आदिवासी होने की दोहरी व्यथा का करुण स्वर भी निर्मला पुतुल की कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है।

संदर्भ -सूची :

- **www.kavitakosh.com in hindi**
- **नयी सदी की हिंदी- कविता, डॉक्टर राधा वर्मा, प्रकाशन संस्थान,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण -सन् 2011**
- **भारतीय साहित्य और आदिवासी- विमर्श, डॉक्टर माधव सोनटक्के, डॉक्टर संजय राठोड़, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण -2017**
- **आदिवासी साहित्य विमर्श, डॉक्टर मोहन चव्हाण, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2019**
- **साहित्य की संवेदना, मनीषा झा, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण -2014**
- **समय संस्कृति और समकालीन कविता, मनीषा झा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण -2011**

सचिन साह
हिंदी में अतिथि व्याख्याता
(सिलीगुड़ी कॉलेज ऑफ कॉमर्स)
दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल
ईमेल आईडी: sahsachin7865@gmail.com

प्रेम

हृदय स्वीकृति प्रेम
आकर्षण अभिव्यक्ति।।

आसक्ति नहीं है प्रेम
प्रेम पावन प्रेम मनभावन
प्रेम शुद्ध सात्विक भक्ति।।

वासना नही प्रेम
प्रेम त्याग तपस्या शक्ति।।

प्रेम में स्वार्थ नही
प्रेम अंतर्मन निष्काम
अभिमान नहीं प्रेम मे
प्रेम निःस्वार्थ जागृति
परमार्थ।।

प्रेम प्रयोजित नहीं
प्रेम सदकर्म सद्भवना
पुरस्कार!!

प्रेम नियोजन
नियोजित नही
प्रेम का नही कोई
निश्चित निर्धारित
सिद्धान्त।।

प्रथम प्रेम अंकुरण
परिवेश परिस्थिति
प्रस्फुटन प्रभा प्रवाह!!

ध्रुव्र को नारायण का
आकर्षण का प्रेम प्रथम
अंतर्मन अंतिम उजियार!।

ॐ नमो भगवते
बासुदेवाय जीवन मूल्य
प्रेम जन्म जीवन सत्कार!!

श्री हरि चरण अनुरक्ति
भक्ति प्रहलाद जीवन
प्रेम प्रथम अनुराग।।

मीरा दीवानी
गली गली पगली सी
फिरती मीरा कान्हा
प्रथम प्रेम संसार!!

एकलव्य वनवासी
गुरु द्रोण चरणों प्रेम
प्रथम प्रताप माटी
मूरत में ही जीवेत जाग्रत
प्रेम प्रथम ब्रह्माण्ड!!

लैला का दीवाना कैफ
प्रेम प्रथम खुदाई दीदार!!

प्रेम पराकाष्ठा का काल
समय प्रमाण लैला मजनू
एक दूजे को दीखता ईश्वर
साक्षात्!!

जाने कहाँ कब हो जाये हो
जाए प्रेम मिल जाये जीवन
भावों के उद्देश्य पथ
आकर्षण अस्तित्व वास्तविक
प्रेम हर्ष हर्षित वर्षित जगत
जीवन सार।।

ईश्वर आराधन का
प्रेम पथ सर्वोत्तम
संस्कार!!

प्रेम प्रथम कोमल भाव
धरातल पर उपजा बट
बृक्ष समान।।

प्रेम भेद विभेद रहित
तमस तामासा से विलग
जीवन धवल प्रकाश ।।

प्रेम मूल्य संस्कृति संस्कार
निश्छल निर्विकार स्वतन्त्र
अस्तित्व आत्म पुकार।।

मिट जाना लूट जाना
स्वंय विलय विलीन हो
जाना प्रेम प्रधान जीवन
प्रथम अवनी आकाश!!

जाति पाती धर्म भेद भाव
नही प्रेम में टूटती संकीर्ण
सीमाओं की दीवार प्रेम
प्रथम जीवन सच्चाई
सत्य सत्यार्थ।।

पीताम्बर का स्वर
शांखनाद सुनो ध्यान
लगाय युवा उत्साह
प्रेम जीवन सत्य
पराक्रम पुरुषार्थ!!

युग मूल्य मानवता अतीत
समय काल वर्तमान प्रेम
प्रथम संकल्प प्रतिज्ञा
जीवन जन्मेजय आचरण
निर्विकार!!

-नंदलाल मणि त्रिपाठी पीताम्बर
गोरखपुर

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

क्षणिकाएं...

आजकल

हैं सोचने वाले
आजकल कम
बोलने वाले ज्यादा
सोचकर बोलें तो
बोलने की ज़रूरत ही न रहे।

अनिवार्य

युद्ध हो
या दोस्ती
मौतें दोनों में
हैं अनिवार्य।

शांति का मतलब

घाटी में शांति
मतलब
बेकसूरों का कत्ल
थोड़े-थोड़े अंतराल पर।

ख़ून और पानी

मेरा ख़ून पानी
तेरा ख़ून ख़ून
तरसेगा तू पानी के लिए
पियेगा अब अपना ही ख़ून।

रंग पानी का

पानी रे पानी
तेरा रंग कैसा
लहू में मिला दो
लहू जैसा।

दिवस

मज़दूर दिवस
सिर्फ एक दिन का
है कोई ऐसा दिन
मुक़म्मल होता जो
बिन मज़दूर का।

बुनियादी प्रश्न

है खड़ी
दुनिया की बुनियाद
श्रमिकों के श्रम पर
क्या है बुनियाद
श्रमिकों की
उस दुनिया में।

कुर्बानियाँ

याद करें आज के दिन
उन मज़दूरों को
मुक़म्मल किया ताजमहल
जिनके हुनर ने
और जान भी ली उनकी
इसी हुनर ने।

-वीरेन्द्र नारायण झा
मधुबनी, बिहार

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

काशी, मालवीय जी और विश्वविद्यालय

आओ मित्रों सब आ जाओ,
सैर तुम्हें करवाता हूं।
जो ज्ञान की पावन धारा है,
उसका दीदार कराता हूं।।

भारत के पावन शहरों में,
काशी नामक एक नगर है।
याद रखो तुम गौरव उसका,
स्मरण तुम्हें इतिहास अगर है।।

जिसको संज्ञा दी जाती है,
उस महादेव की नगरी से।
जो विश्वपटल पर छायी है,
कुछ विद्वानों की पगड़ी से।।

एक बात सदा सुनता आया,
शायद तुमने भी सुना होगा।
है महादेव की पुण्य भूमि,
जाने का ख्वाब बुना होगा।।

यह पुण्य भूमि गंगा तट पर,
बसी हुई है युग-युग से।
गंगा भी गंगा मैया हैं,
जलधार जहां हैं सतयुग से।।

जो स्वर्ग लोक में बहती थी,
अविरलता संग लिये आयी।
जिनका वेग प्रबल ही था,
यह नगरी थी उनको भायी।।

काशी को लेकर जाना तब,
गंगा जी ने था ठान लिया।
यह नगरी क्या कर सकती थी,
बस महादेव को मान लिया।।

जब महादेव की इच्छा थी,
कि वास करूंगा काशी में।
लहरें कैसें अब लें जाएं,
जब रोक दिया सन्यासी ने।।

तब महादेव ने शूल फेंक,
गंगा की धारा मोड़ दिया।
अब गंगाजी ने खुशी खुशी,
इस नगरी को यूं छोड़ दिया।।

एक बात कहा गंगा जी ने,
स्पर्श प्रभु का होगा अब।
यह मोक्षदायिनी कूल बनेगा,
मोक्ष मिलेगा सबको अब।।

यह वो नगरी है रचा जहां,
तुलसी जी ने था मानस को।
था सौंप दिया सत्कर्म हेतु,
निज जीवन भी जन मानस को।।

यह पुण्य भूमि रविदास जहां,
प्रकटे और जग में नाम किया।
कैसे भूले हम उन कबीर को,
साहित्य हेतु बहु काम किया।।

है पुण्य धरा बिक गए जहां,
जो हरिश्चन्द्र कहलाते थे।
है यही धरा उपदेश जहां,
खुद गौतम बुद्ध सुनाते थे।।

ऋषियों की तपस्थली जो थी,
राजाओं की रजधानी थी।
यह काशी अब भी वैसी है,
जैसी उसकी वो निशानी थी।।

है ज्ञान की पावन धारा यह,
था मालवीय जी ने सिद्ध किया।
जब बना लिया था कर्मभूमि,
जग में इसको परसिद्ध किया।।

इस नगरी के लिये मदन जी,
भिक्षाटन भी कर बैठे।
जो खुद में स्वयं समृद्ध रहे,
निज राष्ट्र हेतु कुछ कर बैठे।।

दान और भिक्षा लेना,
योगी को शोभा देता है।
जो मांग करे बस परहित में,
विरला ही योगी होता है।।

जब स्वप्न देखना जुर्म रहा,
उस समय स्वप्न देखा जिसने।
है कोटि-कोटि सादर प्रणाम,
निज जीवन को फेंका जिसने।।

चाह रही होती उनकी,
शायद उद्योग बना देते।
कुल के लिये जीवन भर का,
ऐसा वो भोग बना देते।।

था बता दिया जनमानस को ,
जो चाहो वो मिल जाता है।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।।

मांग मांग कर धन दौलत,
था खड़ा कर दिया विद्यालय।
विद्यालय ही नहीं बल्कि ,
कह दो इसको तुम देवालय।।

नाम दे दिया इसको बीएचयू,
जो शिक्षा का केंद्र बन गया है।
नव ज्ञान और विज्ञान लिये,
सबके जीवन में रम गया है।।

है पवित्रमयी शिक्षा इसकी,
जग में सम्मान लिये भी है।
शिक्षा तो शिक्षा ही दी,
जग को विद्वान दिये भी है।।

यह नवीन की बातें थी,
जिसको तुम लोग सुन रहे थे।
जो सुना दिया था दादा ने,
जब वो चने भुन रहे थे।।

हे दूर दूर के छात्र सुनो,
आओ पढ़ लो बी एच यू में।
यह नगर और विद्या दोनों,
पा जाओगे बी एच यू में।।
पा जाओगे बी एच यू में...

-नवीन प्रकाश द्विवेदी
विधि छात्र, बीएचयू

नारी की अभिव्यक्ति

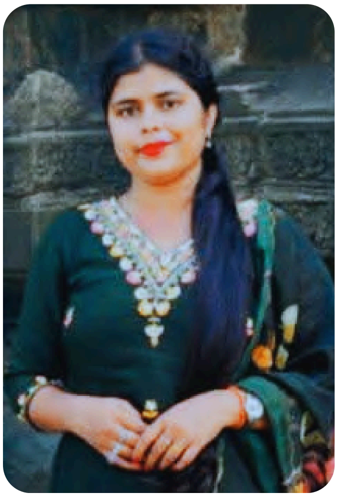

माना कि हम लड़किया हल्की-सी चोट पर रो देती है
पर सच तो ये भी है,कि
मासिक धर्म से लेकर, मां बनने तक के दर्द को भी आसानी से सह लेती है
आँख भले ही नम हो जाए
छोटी-छोटी बातों से
पर मन में एक संकल्प लिए
वो सारी मुश्किलों से भी लड़ लेती है
चाहे हालत हो कोई भी हौसला बुलंद रखती है।
लड़किया अकेले में भी सौ का दम रखती है
बनती है जब लक्ष्मी, घर को सवार देती है
रुप धरे जब दुर्गा का, तो पापीयों का नाश करती है
कभी ममता कि छाया, कभी प्रेम का संचार करती है
माना कि है, वो नाज़ुक बहुत
हृदय भी उसका कोमल है
पर जहाँ भी जाए उस घर में खुशियाँ भर देती है
कभी चंचल, कभी शांत, कभी गंभीर
रूप उसके अनेक है
दु:ख को रख कोने में,साथ रहते हर एक है
कभी तुम्हारी आवाज़ बनेगी,
कभी तुम्हारी हिम्मत भी,
साथ चलेगी हमेशा वो
परिस्थिति हो कोई भी
माना कि अब वह आधुनिक युग कि नारी है,
पर संस्कारों में भी कमी नहीं
सोच उसका तुमसे थोड़ा अलग होगा
पर जैसी दुनिया वैसा बनना होगा
उसकी कपड़ों को देख कर
दुनिया जज तो करेगी ही
ये समाज-समाज की डर से
इंसान स्वयं की खुशियों को मारेगा ही
ये मत पहनों,वो मत पहनों
हर कपड़ों पर तुम रोक लगाते हो
यहाँ नहीं जाना, वहाँ नहीं जाना
क्यों हमारे पैरों में हो तुम जंजीर बांधते
विरोध नहीं करती मैं तेरा
पर सवाल जरूर करुंगी
क्या है नारी, क्यों है नारी
क्या इसका अस्तित्व है
क्यों नज़रिया बदल जाता है
एक स्त्री को देखकर
क्यों हर बातों पर प्रतिबंध लग जाती है
जब नारी की बात आती है
तुम कहते हो लड़कों से अगर वंश है बढ़ता
तो फिर से बताओं
तुम्हारा जन्म किसी नारी तत्व के बिना हुआ है
क्या तुममें नारी अंश नहीं
क्या तुम्हारी माँ नहीं
या तुम किसी के पिता नहीं
दिल तो तुममें भी होगा
फिर क्यों उसमें नारी का सम्मान नहीं
क्या उसको दर्द नहीं, क्या उसको तकलीफ़ नहीं
घर से समाज तक
हर एक-एक व्यक्ति कि निगाह तक
क्यों उसपर ही टिकती है
क्या नारी की यही अभिव्यक्ति है
क्या नारी बस शब्द मात्र है
या है उसका कोई गूढ़ अर्थ
कभी पहनती थी पाज़ेब, बहुत शौक़ से
अब वहीं तुम्हारा श्रृंगार है
माथे पर सिंदूर यही तुम्हारी जीवन का मुख्य आधार है
दुनिया तुम पर बस एक टैग लगाएगी
इसकी बेटी, उसकी पत्नी कह कर बुलाएगी
क्यों तुममें, तुम नहीं हो
नारी तुम किसी से कम नहीं हो,
एक बीज, एक वृक्ष बन जाता है
आशा की एक किरण, हौसले कि जड़ बन जाता है
तिनका-तिनका जोड़ कर पक्षी घर बनाती है
पर उसकी मजबूती हौसलों से ही आती है
इसलिए नारी तुम्हारे जैसा कोई नहीं
तुमसे ही है दुनिया, तुमसे ही हम है
मेरे तरफ़ से नारी को शत-शत नमन है।।

-नेहा चौरसिया
तिनसुकिया, असम

कविता में 'बूढ़ी'

निगाहें थक गई,
कह न सकी,
रह न सकी
सकुचाते हुए बोली
खाना बन गया क्या?
थोड़ी देर वातावरण
ध्वनि रहित रहा ।।

न कहते–कहते
एक दफा स्वतः बोल उठी
खाना बन गया हो तो
'बूढ़ी' का वाक्य पूरा भी न हुआ
झल्लाता स्वर कानों को चीर गया ।।

सर्दियों में
भूख ज्यादा नहीं लगती
ये बुढ़िया....!
जब देखो....!
"कौआ नियन कांव–कांव करत है"
बोली यहां तक न रुकी
अधबोली में कह गई 'bitch'
एक रोटी के खातिर
जान में जान तक आने नहीं देती।।

कुछ क्षण सोच
बूढ़ी को लगा 'बीज' की तरकारी
मन ही मन खुश हो गई
'कन्या' को दुआ देते हुई बोली
सदा सुहागन रहो बहुरिया
तुझे मेरी भी उम्र लग जाए
आज तूने.....!
मेरी पसंद की तरकारी और रोटी पकाई।।

सहसा ही सब भ्रम दूर हुआ
जब ठंढ़े भात पर हाथ पड़ा
ई कि कन्या तू कहलों.......!
'बीज' के सब्जी बनेलों.....!
दिन में बैठ........!
दो दिन से छिलका उतरलों रीहै:
नहीं थोड़ा-सा ही था तो
वो 'मटन' में डाल दीए
'बीज' डालने से स्वाद बढ़ जाता।।

अच्छे से देख नहीं पाती
क्योंकि उम्र पैसठ कर चुकी
पैसा बचता ही नहीं जो
आंखों का ऑपरेशन करा सके
डर–डराए कुछ बोल न सकी
पेट की भूख....!

स्वाद को क्या देखना
बस पेट भर जाए तो
शायद मैं आराम से सो पाऊंगी।।

प्रधानमंत्री वृद्धा-पेंशन भी मिल रहा
बूढ़ी तो आज–तलक देख ही नहीं पाई
उस योजना से मिले पैसों को
पहले तो वो नोट को छू भी लिया करती थी
जब से हस्ताक्षर करना सीखी है,
'एटीएम' बनवा दिया गया है,
जब चाहे बेटा–बहू साफ कर देते खाता को।।

'बूढ़ी' को खबर तक होने नहीं दिया जाता
पेंशन के पैसों से...!
कब अपने गले का हार बनवा आती?
कब नए–नए मोजा ले आती 'गुदरी' से?
कब गुलाब जामुन ले आती?
कब चाट–चाउमीन ले आती?
एक टूक नहीं मिलता !
पेंशन वाली 'बूढ़ी'को।।

जैसे–तैसे खाना खत्म करना चाहती
लेकिन थाल ज्यादा ही भरा था
न खाए तो भी जाए,
खाए तो भी जाए...
आज न जानें थाल भरा खाना
उसे और भी महंगा पड़ गया
'बूढ़ी 'खा लेती और दिन की तरह
लेकिन आज वो खा ही नहीं पा रही
खाती भी तो कैसे?
आंखों से आंसू थाली में गिर
जहां नमक मिर्च दिया गया था
क्षण भर में दाल–भात का रूप ले लिया।।

एक आहट सुनाई दी....
अंदर कमरे में कोई आया
अंधेरा होने के कारण
'बूढ़ी' देख न पाई...
'बूढ़ी' के रुम का बल्ब
कमों–बेस ही जलाया जाता
ताकि बिजली बिल ज्यादा न आए।।

चीखते, फदरते हुए....
खाना! खाना नहीं था तो
पानी थाली में क्यों डाले?
खाना नहीं था तो
कुत्ता जैसा शाम से क्यों भुकते रहते?
कम से कम भात बर्बाद नहीं होता
बकरी तो खाती...
बकरी अब कैसे खाएगी?
पानी वाला भात....!

ई 'बुढ़िया' न कहते–कहते
स्वतः रुक गई.......?
गुस्से में थाली का पानी
'बूढ़ी' की चारपाई पर गिरा गई।।

रुलाई रोक न पाई
रुक गई ये तनाव का सिलसिला
रात कब बीत गई
कोई जान नहीं पाया?
सुबह को बजे सात
सब जागे आराम–आराम से
सबसे पहले जगने वाली 'बूढ़ी'
आज न जानें क्यों?
अब तलक उठी नहीं ।।

सुबह हर रोज के जैसा
हट्ज से ऊपर ध्वनि पार गई
आस–पास का वातावरण दूषित
खुद तो परेशान दूजे भी परेशान।।

चिल्लाते हुए कहती
आठ बजने को आए
अभी तक उठा नहीं जाता
गुस्से में हिलाते–डुलाते
'बूढ़ी' न हिली न डुली
एक–दम काठ की तरह
शायद ठंढ़ में
रात भर ठिठूरता रहा
बिस्तर गीला,
ठंड कारण 'बूढ़ी '
हमेशा के लिए 'खा' सो गई
सुबह कौआ कांव–कांव कर रहा
आज 'बूढ़ी' कांव–कांव नहीं कर रहीं
'बूढ़ी' बरसों बाद चैन की नींद सो पाई।।
(एक 'बूढ़ी' स्त्री की व्यथा)

-नीतु कुमारी 'बाबू'
पूर्णिया, बिहार

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

पढ़ना बेटा

बड़े शहर में भेज रहा हूँ , अपने कद से बढ़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

देख शहर में चकाचौंध है
उसमें मत खो जाना तू
पग पग पर आमंत्रण विष के
विषधर मत हो जाना तू
कदम अगर ये बहकें तेरे , तो कदमों से लड़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

केवल तू ही शहर न आया
सौ सौ सपने आए हैं
आँगन गलियाँ गांव मुहल्ला
तुझसे आस लगाए हैं
आशाओं के इस पर्वत पर , कदम जमाकर चढ़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

तू जेठा है घर का प्यारे
तुझको राह बनानी है
तेरे पीछे पीछे तेरी
छोटी बहना आनी है
जिसको छूने को जग तरसे, ऐसे मानक गढ़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

आशीषों के साथ साथ ही
भेज दिए हैं रे बेटा
माँ ने तेरी जेवर अपने
बेच दिए हैं रे बेटा
शुभ परिणामों के तू गहने, माँ के तन पर मढ़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

पढ़ लिखकर तू मेरे बच्चे
जिस दिन कुछ बन जाएगा
माँ बाबा को जीते जी ही
मोक्ष यहाँ मिल जाएगा
कुल का तुझको तारण करना , भागीरथ सा अड़ना बेटा
तुझे कशम है माँ बाबा की , खूब लगन से पढ़ना बेटा !!

आलोकेश्वर चबडाल
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)
गेल (इंडिया) लिमिटेड

ज़ालिम की याद

वो ज़ालिम हमें याद आने लगे हैं-2
मोहब्बत में हम मुस्कुराने लगे हैं-2
ये महफ़िल रुहानी, ये रौनक गुलाबी
हमें सारे मौसम सुहाने लगे हैं
जहाँ में किसी तौर पर लोग जानें
इसी फ़िक्र में दिल जलाने लगे हैं
बड़े हो गए हैं ये मजलूम बच्चे
ये औरों पे अब जुल्म ढाने लगे हैं
चलो, होश सबके ठिकाने लगे हैं
तुम्हें बेवफ़ा सब बताने लगे हैं
कहीं याद आ जाए कोई न वादा
वो मेरे ख़तों को जलाने लगे हैं
वो ज़ालिम मुझे याद आने लगे हैं
मोहब्बत में हम मुस्कुराने लगे हैं
वही बात चुन-चुन कर उसने है छेड़ी
भुलाने में जिनको ज़माने लगे हैं
रास्तों पे मिलता है अब गर्म पानी
प्यासे सभी मयकदों में जाने लगे हैं
जो बरसों से सोए पड़े थे बदन में
वही ज़ख्म फिर मुस्कुराने लगे हैं
ये नफ़रत के धंधों के उस्ताद सारे
दुकान-ए-मोहब्बत चलाने लगे हैं
हसीनों की गलियाँ हैं अब तन्हा-तन्हा
जो आशिक थे, दफ़्तर को जाने लगे हैं
सभी को नए ख़्वाब आने लगे हैं
सभी दिल नए गीत गाने लगे हैं
कहानी हमारी हम सबको सुनाकर
हँसाते-हँसाते रुलाने लगे हैं (×2)
वो ज़ालिम हमें याद आने लगे हैं
मोहब्बत में हम मुस्कुराने लगे हैं।

-प्रशान्त दीक्षित 'प्रसु'
पडरौना, उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

रिश्तो को सियासत ने शर्मसार कर दिया,
शतरंज की चालों से खबरदार कर दिया।
है शुक्रिया उनका जिन्होंने साथ छोड़कर,
पहले से मुझको और समझदार कर दिया।
खाए हैं वार मोम सी नाजुक सी रूह पर,
एक-एक चोट ने मुझे दीवार कर दिया।
करने तो चले थे वह जमींदोज बाखुदा,
मजबूत मगर और ये किरदार कर दिया ।
पहले तो फक्त डायरी में जा रही लिखी,
अब शायरी को और असरदार कर दिया।
हम सह गए फिर भी तमाम उनका वो जहर,
बस चंद छींटों ने उन्हें बीमार कर दिया।
वो थे चले जिस ठौर से उस पर ही आ गए,
कैसा गजब ये आपने सरकार कर दिया।
झूठा था भरोसा तो भरोसे को तोड़कर,
खून के रिश्तों को दागदार कर दिया।
जो बात भी करता ना था खुलकर किसी से 'जीत',
उसको मुशायरों का तलबगार कर दिया।

डॉ. जितेन्द्र कुमार ' जीत '
सहायक आचार्य, धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़
+91 7906225675

मेरे प्रेम पत्र

मेरे द्वारा लिखे हुए तुम्हारे नाम प्रेमपत्र,
एक ऐतिहासिक दस्तावेज हो सकते हैं,
इस सभ्यता के लिए।

पवित्र ग्रंथ हो सकते हैं,
किशोर वय के लिए ।

बड़े से बड़े तानाशाह के विरुद्ध,
इंकलाब की घोषणा कर सकते हैं मेरे प्रेम पत्र।

किसी भी ईश्वरीय शक्ति के बरक्स,
खड़ा कर सकते हैं तुम्हे ।

पर्याप्त थे मेरे प्रेम पत्र,
राजाओं- पुरोहितों को प्रेम पर प्रतिबंध लगाने के लिए।

सरकारी कागजों के इतर जो तुम्हारे नाम रहे हैं,
वो भी मिलेंगे इन्हीं प्रेम पत्रों में

उत्खनन में जो बहुमूल्य वस्तुएं मिलेंगी,
वो होगें मेरे प्रेम पत्र ।

सार्वजनिक नहीं होने चाहिए मेरे प्रेम पत्र,
बेहद निजी और पवित्र हैं ये।

सार्वजनिक होते ही,
प्रेम की एक सभ्यता का हो जाएगा विनाश।"

-अरविंद यादव
शोधार्थी (हिंदी विभाग)
प्रो.राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्विविद्यालय,प्रयागराज

फूल और फुल

तुम मेरा फूल हो,
जिसे मैं पसंद नहीं,
पूरे मन से प्रेम करता हूँ।

तुम वह फूल हो,
जिसे मैं क्षणिक सुख के लिए
न तोड़ता हूँ,
बल्कि हर रोज़ प्रेम से सींचता हूँ।

तुम वह फूल हो,
जिसे ऊंचाइयां छूने के लिए
हौसला और उल्लास देता हूँ।

और तुम मेरी वही फूल हो,
जिसे मैं केवल सूंघता नहीं,
बल्कि पूरे विश्वास से सहेजता हूँ।

पर वह सच में "फुल" है,
जो इस फूल को
सिर्फ पसंद करता है।

वह फुल है,
जो बिना उसकी आत्मा और प्रतिभा को जाने,
उसे तोड़ लेता है।

और वह मूर्खों में सबसे बड़ा "फुल" है,
जो इस फूल को
सिर्फ सूंघने के लिए,
सजावट की तरह रख छोड़े है।

-गुरुशरण साहू
मधुबनी, बिहार

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

अनुभूति के तंतु

जब शब्दों के संगमरमर पर भावों की प्रतिछाया उभरती है,
तब हृदय, भाषा नहीं संवेदना का अनुवाद करता है।
रहते हैं वाक्य मौन वहाँ,
जहाँ दृष्टि स्वयं दीपशिखा बनकर स्पर्श करती है।
निज अंतर की वीणा पर जब स्वर मौन हो जाते हैं,
फिर संबंधों की तान स्पर्श से झंकृत होती है।
शब्द उतरते नहीं वहाँ, जहाँ भाव जलधि लहराता है,
वाणी तो मात्र तरणी है, बाँधों की छाया नहीं।
संबंध कोई संवाद-तंत्र नहीं,
आत्मिक तरंगों की अनसुनी गूंज हैं,
जो बिन बोले
अंतर की परिधि पर स्पंदन रच देती हैं।
आत्मा की गुप्त गूंज हैं,
मौन में भी स्पष्ट श्रुत होती हैं।
संवेदनाएँ कोई संदेश नहीं,
हृदय-सूत्रों की गूढ़ अभिव्यक्तियाँ हैं।
जहाँ मन का मधुकर आत्मीयता की कली पर मँडराता है,
वहीं स्नेह का पराग पल्लवित होता है।
जोड़ते नहीं तार हृदयों को,
स्मृति के मौन कोशों में अदृश्य वह तंतु हैं
जो समय से परे, प्रतीक्षा से परिपूर्ण होता है।
निभाता है संबंध का शाश्वत धर्म।
संप्रेषण का आधार सदैव संकेत होता नहीं,
कभी-कभी मौन सबसे प्रखर उद्घोष बन जाता है।
जहाँ "मैं" और "तुम" की सीमाएँ विलीन हो जाएँ,
लेते हैं जन्म संबंध वहाँ,
नयनों की नमी से, वाणी की विराम से।
संबंधों का आधार केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं,
अंतःकरण की पुकार का प्रत्युत्तर है।

-नवीन कुमार शर्मा
शोध छात्र (शिक्षा विभाग)
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

पेड़ और पर्यावरण

आओ मिलकर पेड़ लगाएं, धरा को फिर से स्वर्ग बनाएं।
तेज गर्मी हो या अनावृष्टि, प्रकृति की अनियमितता से बचाएं।
बरसों से मानव विकास के नाम पर पेड़ों को है काट रहा।
अनजाने में ही वो विनाश का आमंत्रण सबको बांट रहा।
पेड़ ही नहीं रहेंगे तो धरती पर कैसे फिर बारिश होगी।
तापमान बढ़ेगा धरा का आग जैसी सूरज में तपिश होगी।
पेड़ कटने से मानसून का चक्र भी गड़बड़ाए।
बारिश की कमी से खेतों में फसल कैसे लहराए।
बिन पेड़ों के प्रकृति भी अपना संतुलन खो देगी।
विनाश ऐसा होगा कि मानव सभ्यता भी रो देगी।
उठो जागो ऐ मानव अब भी वक्त है संभल जाओ।
पेड़ लगाओ हरियाली फैलाओ प्रकृति को फिर सजाओ।
जीवन गर चाहिए पृथ्वी में तो पेड़ों से करो प्यार।
हर इंसान की जुबां पर हो मेरा वृक्ष मेरा परिवार।।

-मुकेश कुमार सोनकर
रायपुर छत्तीसगढ़

उनकी भावना

मैने जब जब तुमको देखा है ।
तुममें अपार संभावना देखी है।।
निरंतर बहते रहने की,
जिजीविषा देखी है।
ऊबड़ खाबड़ रास्तों में,
चलने का सामर्थ देखा है।।
इसीलिए कहता हूं,
जीवन में चाहे जो भी करना ।
अपनी संभावनाओं को सीमित मत करना ।।
लोग आयेंगे।
तुम पर बांध बनाने का प्रयास करेंगे।।
ये उनकी भावना है।
उनका हित है।।
पर नदियों को व्यक्तिपरक नहीं, समाजपरक होना है ।।।

-अतुल कुमार सिंह,
शोध छात्र (विधि विभाग),
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
संपर्क 7054990191

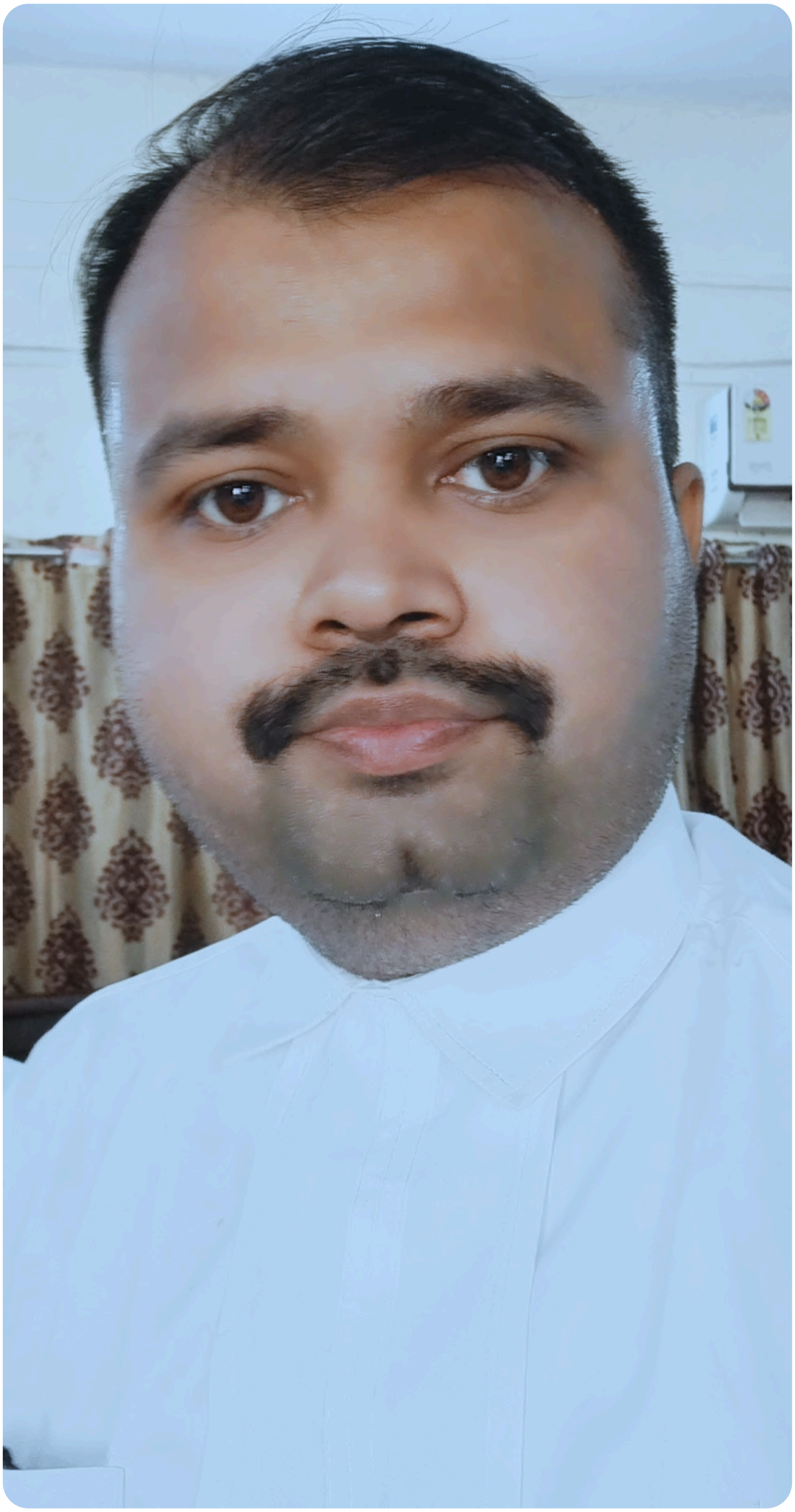

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

अजन्मी बेटी की पुकार

आने से मेरे , माँ की गोद
व्यथित क्यों होते हैं लोग
माँ भी तो है एक बेटी
जननी है जो सारी सृष्टि की....

बेटी होना क्या गलती है
हम ही तो सृष्टि रचती है
गोद हमारी ही भरती है
फिर हम ही क्यो मरती हैं..........

याद मुझे है वो दिन भी
मनाई थी मिलके सबने खुशी
सुन के खबर माँ की गोद हरी
मुस्काई मैं अंदर,देख लिए थे सपने कई....

फिर आया बन के काल वह क्षण
कराया गया माँ का भ्रूण परीक्षण
देख नतीजा हुआ खत्म जीने का आसार
उठने लगा सबके दिलों में ज्वार ही ज्वार.......

माँ, तुम तो दे दो साथ मेरा
ना मसलो मुझको, मैं खून तेरा
करती हूँ वादा, बनूँगी गुरूर तेरा
बस ,जीने का दो अधिकार जरा........

देखना चाहूँ मैं भी दुनियाँ
चलना चाहूँ मैं भी गलियां
छूना चाहूँ पिता की बहियां
बनना चाहूँ माँ की गुड़िया.....

बनूँगी मैं भी सबका सहारा
करूँगी रोशन नाम तुम्हारा
चमकूँगी मैं भी बन के तारा
जीने दो मुझको भी, बाहर आ......

माँ की ममता, पिता का साया
मैं भी चाहूँ, बेटी हूँ तो क्या
लेने दो जन्म दुनिया में मुझे भी
ना मारो कोख में मुझे अजन्मी ही.....

-भारती यादव 'मेधा'
+91 9926518222

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

भीतर की जंग

जिंदगी की राहें कठिन,
कुछ ऊबड़-खाबड़ सी,
हर मोड़ पर दिखते हैं,
मुश्किलों के पर्वत विशाल।

बाहर की आंधी से सामना,
है एक जंग रोज की,
पर भीतर की हलचल से,
है संघर्ष और भी विकट।

खुद की आवाज को सुनना,
है सबसे बड़ा हुनर,
भीतर के डर को खामोश कर,
साहस को जगाना।

हरास में जब खो जाए दिल,
उम्मीद की लौ बुझने लगे,
तब अंदर की आग से खुद को,
फिर से रोशन करना।

समझो खुद की क्षमता को,
खुद ही जीवन की रोशनी बनो,
स्वयं को समझकर बढ़ो आगे,
हर बाधा को हराने के लिए।

-अंजना गोमस्ता
+91 8349634433

आधुनिकीकरण का प्रभाव

हमें देखना है....
हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं,
इस भाग-दौड़ की दुनिया में
जिन्दगी जीने के लिए वक्त नहीं।
अपनी जिम्मेदारी का तो एहसास है,
पर उन्हें निभाने का वक्त नहीं,
पढ़ाई के सारे साधन तो हम पा चुके
पर इन्हें अपनाने का वक्त नहीं ।
आँखों में है नींद बड़ी
पर सोने के लिए वक्त नहीं
इंटरनेट की दुनिया में
पढ़ने के लिए वक्त नहीं।
फेसबुक की दौड़ में ऐसे दौड़े
कि थकने का भी वक्त नहीं
अतिरिक्त पढ़ाई की कद्र तो है
लेकिन, अधूरे कार्य के लिए वक्त नहीं।
माँ की लोरी का एहसास तो है
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।
आधुनिकता की दौड़ में सारे रिश्ते हम खो चुके
अब इन्हें दफनाने के लिए भी वक्त नहीं।
तू ही बता ऐ जिन्दगी
क्यों इस जिन्दगी में कोई बात नहीं
कि हर पल पढ़ने वालों के लिए
दिल से पढने का वक्त नहीं।

पैसों की दौड़ में ऐसे दौर ,
कि थमने का भी वक्त नहीं ।
पराए एहसानों की कद्र नहीं,
जो अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं ।
तू ही बता ऐ जिंदगी ,
क्यों इस जिंदगी में कोई बात नहीं ,
हर पल मरने वालों को
दिल से मरने का भी वक्त नहीं।

-पूनम लता
ग्रेटर नोएडा,उत्तर प्रदेश

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

मात्र प्लाट

- वीना आडवानी तन्वी

कुछ लड़कियों के विवाह के बाद माँ-बाप अपने जिस्म के अभिन्न अंग को यूं उखाड़ फेंकते जैसे वो उनकी औलाद थी ही नहीं। जैसे उसे कूड़े के ढ़ेर से उठाकर लाए हों और बस जैसे-तैसे उसे बड़ा कर शादी करके भूल जाना है उस कूड़े को। या तो कुछ माँ-बाप को बेटी एक बोझ सी लगती जिसे बस बड़ा कर उसे ब्याह कर अपने इस बोझ से बोझ मुक्त होना ही अपना कर्तव्य लगता। यही होता अधिकतर बेटियों के साथ समाज में। बस कर दी शादी दे दिया दहेज जितना दिया उतना ही हक का बता कर बेटी को जैसे लताड़ ही देते अब उसके बाद बेटी जिये-मरे, सुखी हो या दुखी उन्हें कोई भी मतलब नहीं है। कुछ समाज का हवाला देते तो कुछ तो यही कहते की कम से कम दो वक्त की रोटी तो मिल रही चुप करके वही खा तेरी किस्मत में ही यही लिखा तो क्या कर सकते हम। हमनें तो अच्छी तरह देख परख के शादी की दहेज भी दिया। परंतु उन्हें अपनी बेटी की बताई बातों उस पर हो रहे मानसिक या शारीरिक अत्याचार की पीड़ा का कोई फर्क नहीं पड़ता। पड़े भी क्यों भला? एक बोझ या यूं कह लो एक कूड़ा घर से निकाल फेंक दिया अब उसे कोई कुचले या ढंग से रखे या नहीं।

ऐसी बेटियां न ससुराल के घर को अपना घर कह सकती और न ही मायके का घर उसका घर रह पाता बताओ अब ऐसी बेटियां माँ-बाप के जीतेजी भी एक अनाथ बच्ची की तरह पल-पल अपने साथ हो रहे अत्याचार को सहते हुए बस उस प्रभु से मौत की भीख मांग रही होती है। पर सच कहूं ऐसी बेटियों की करुणा दर्द से भरी चित्कार भी उस भगवान तक नहीं पहुंच पाती। चलो खुद घर छोड़ने का फैसला कर भी लो परंतु माँ-बाप ने अपने घर के दरवाजे बंद कर दिए हों तो वो बेटी कहाँ जाए अगर अकेले निकलती है घर से फैसला कर तो बाहर नोचने वाले भेड़िए जो खुले आम मौके की तलाश में रहते नोंच डालेंगे ऐसे में सबसे पहले तो उसके सर पर कहने को अपनी छत होना बहुत जरूरी है। दहेज तो वो लोभी डकार जाते और डकारने के भी बाद जिनका पेट नहीं भरता मतलब ससुराल वाले वो तो एक कौड़ी भी नहीं देते क्योंकि वो चाहते कि बहु वैसे ही रहे जैसे वो रखना चाहते जैसे एहसान करके मुफ्त में किसी की बेटी ब्याह के ले आए।

देखो ना माँ-बाप ने एहसान जताया हमनें अपनी जिम्मेदारी निभा दी अब तुम जानो या तुम्हारी किस्मत और ससुराल वालों ने एहसान जताया कि जो मिल रहा जैसा है पति वैसा ही रहो हमारा एहसान मानते चलो फिर चाहे हर एक दिन बहुत करीब से मौत के ही दर्शन क्यों ना करना पड़ जाए परंतु मौत भी नहीं मिलेगी। मतलब तिल-तिल मरने वाली जीतेजी मौत नरक का अनुभव इसी धरा पर कुछ बेटियों को हो जाता। कुछ तो औलाद के खातिर सब खामोशी से सहती जाती और कुछ माँ-बाप के सहयोग नहीं मिलने पर।

एक वीडियो ने बहुत आनंदित किया था जिसकी खबर सोशल मिडिया के विभिन्न प्लेटफार्म से भी दी गई की एक पिता ने अपनी बेटी पर हो रहे जुर्म के बारे में जानकर उसी तरह बैंड-बाजा बजाकर बेटी के ससुराल जाकर उसे लेकर आए इज्जत के साथ मायके अर्थात उसके अपने घर में कहकर, जिस तरह उन्होंने विदा किया था कभी बेटी को खुशी-खुशी और समाज को कहा ये मेरी बेटी है उस पर हो रहा अत्याचार के विरोध में आप सभी मिल आवाज़ नहीं उठा सकते तो मेरी बेटी अपने माँ-बाप के घर में है आपके नहीं इसलिए आप सभी को बोलने का हक नहीं है कहते हुए अपनी बेटी के मनोबल को बढ़ाया उसे ये आभास नहीं होने दिया की उनकी बेटी उन पर बोझ है बल्कि उनकी बेटी उनका गर्व है। हजारों में एक दो बेटियां ही अपने माँ-बाप से मिले सहयोग से स्वर्ग भरी जिंदगी पाती फिर से शेष बची जिंदगी में? किसको दोष दें बेटियां खुद को एक बेटी होकर पैदा होने पर खुद को ही एक अभिशाप समझें बेटियां या जो लोग कहते की बेटी बोझ होती बोझ बस उस बोझ को उतारकर जैसे-तैसे दूसरे के कांधे पर डाल कर गंगा नहाना है। खैर ऐसा भी गंगा नहाना कब सार्थक होगा जहाँ उन माँ-बाप की बेटी नित प्रतिदिन मौत के बाँहों में जीतेजी सो रही हो और वो धर्म स्थलों पर जाकर माथा टेक रहे।

जब मैं दो बार गर्भवती हुई तो सच कहूं यही सोचती और खुद से भी कहती कहती शुक्र है भगवान ने मुझे बेटी नहीं दी। वरना मैं उसका भविष्य तो नहीं देख सकती उसके बचपन से ही परंतु हाँ यदि उसके साथ भी मानसिक प्रताड़ना या अन्य कष्ट होता तो मैं नहीं देख पाती। आज मैं लेखिका लड़कियों को यही सीख देती की खुद को इतना काबिल बनाओ की माँ-बाप शादी के बाद भी लड़की मायके में आकर बैठती है तो कमाने वाली लड़की को बोझ नहीं समझेंगे क्यों कि वो दो पैसा कमाकर ही देगी और आत्म सम्मान के साथ दो वक्त की रोटी उसे मायके में भी मिलेगी और सबका प्यार भी परंतु यदि दो पैसा कमाके नहीं दिया या आप में काबिलियत नहीं तो मायके वाले भी नहीं थूकते चाहे फिर क्यों ना बेटी उनका अपना ही खून हो, अंश हो। और माँ-बाप को आज भी बहुत से लेख के माध्यम से यही सीख देती आई हूँ चाहे आप बेटी के लिये उसके पैदा होते से ही 300 या 600 स्क्वायर फीट का एक प्लाट भी खरीद के रख दिया तो कम से कम वो एक झोपड़ा बना कर रह सकती अपने घर में शायद अपने उन बच्चों के साथ भी जो अपनी माँ का साथ देते हुए उसके साथ आएं हों। बेटी भी इंसान हैं उसमें भी भाव है जज़्बात है जैसे आप सभी मे हैं यूं अपनी बेटी को बोझ समझ पैरों तले रौंदने के लिये ना छोड़ दें और न ही ससुराल वाले अपनी बहु बना किसी की बेटी को पैरों तले रौंदते हुए उसे जीतेजी मरणावस्था में पहुंचाएं।

बनारस से निकलनेवाली साहित्यिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया के रक्षाबंधन विशेषांक अगस्त 2025 अंक हेतु आपकी एक कविता/कहानी/लघुकथा/संस्मरण/स्मृतियां/लेख अथवा अन्य विधा की रचना आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना के साथ एक फोटो, संक्षिप्त परिचय, संपर्क सूत्र सहित पत्राचार का पता व प्रकाशन शुल्क (₹200 रुपए) का स्क्रीनशॉट ई-मेल में संलग्न करना न भूलें।
हमारा ई-मेल पता है–
vns@prantiindia.com

BHIM UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
SCAN & PAY WITH ANY UPI APP
G Pay PhonePe Paytm

साहित्यिक मासिक पत्रिका

Pranti

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

हमारी नई पेशकश...

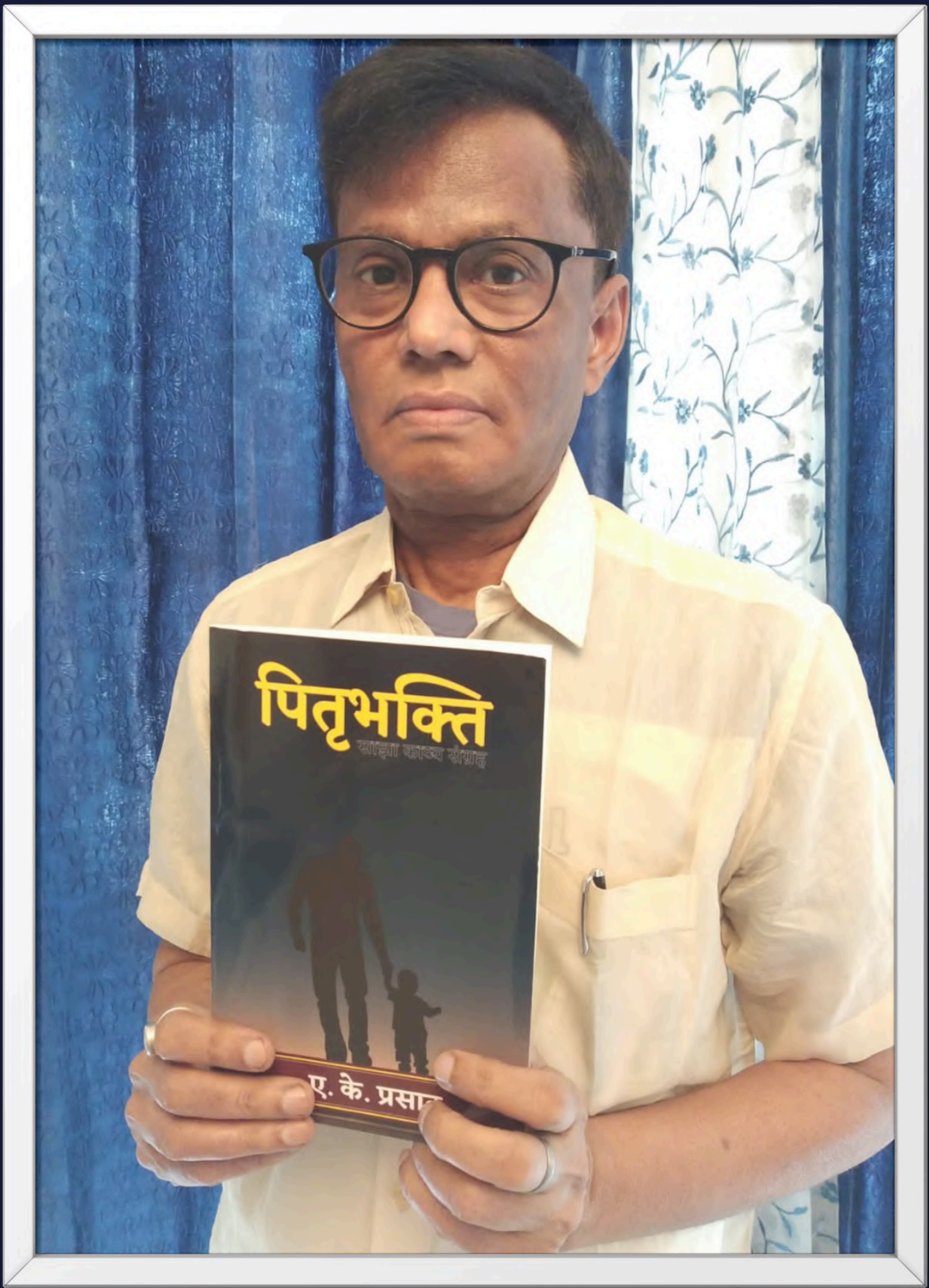

यहाँ भी उपलब्ध ...Flipkart amazon